Abstract

Socio-emotional competence is the ability of an individual which not only helps to learn but also helps to establish and maintain healthy and meaningful relationships. It involves successfully managing emotional arousal and engaging positively in social settings. Thus, socio-emotional competence is very vital for overall development of adolescents at secondary school stage. Therefore, the present study is a genuine attempt to study the levels of socio-emotional competence among adolescents in relation to socio-demographic variables and academic achievement. The main objectives of the present study were to study the levels of socio-emotional competence, the gender and locality difference on five dimensions of socio-emotional competence (i.e. self-awareness, social awareness, self-management, relationship management and responsible decision-making skills) and also find out the relationship between socio-emotional competence and academic achievement among adolescents. For the present study, descriptive survey method was used and the sample of 400 adolescents from 10 secondary schools (05 Government and 05 private schools) of Anantnag district of Jammu and Kashmir Union Territory were selected by employing stratified random sampling. The findings of the study revealed that adolescents had different levels (i.e. high, average and low) of socio-emotional competence and female adolescents had better socio-emotional competence as compared to male adolescents. Overall, rural and urban adolescents had similar socio-emotional competence and urban adolescents were superior in self-management skills than rural adolescents. High academic achievers were more competent than low academic achievers irrespective their gender and locality. Academic achievement and socio-emotional competence were positively correlated to each other and high socio-emotional competence leads to high academic achievement. Thus, the present study has its implication for teachers, parents, social reformers, administrators and guidance workers to provide the conducive environment at home and school, and inculcate value education so that social competence can be improved. School curriculum to be reframed/revised in the light of National Education Policy-2020 by including all academic activities which shall improve the socio-emotional competence of students at secondary school level.

सारांश

सामाजिक-भावनात्मक क्षमता व्यक्ति में विधमान ऐसी क्षमता है जो न केवल सीखने में मदद करती है बल्कि स्वस्थ और सार्थक संबंधों को स्थापित करने और बनाए रखने में भी सहयोग करती है। इसमें भावनात्मक उत्तेजना को सफलतापूर्वक प्रबंधित करना और सामाजिक सेटिंग्स में सकारात्मक रूप से शामिल होना सम्मलित है। इस प्रकार, माध्यमिक विद्यालय स्तर पर किशोरों के समग्र विकास के लिए सामाजिक-भावनात्मक क्षमता अत्यंत महत्वपूर्ण है। अतः वर्तमान अध्ययन सामाजिक-जनसांख्यिकीय चरों और शैक्षणिक उपलब्धि के संबंध में किशोरों में सामाजिक-भावनात्मक क्षमता के स्तरों का अध्ययन करने का एक वास्तविक प्रयास है। वर्तमान अध्ययन के मुख्य उद्देश्य सामाजिक-भावनात्मक क्षमता के स्तर, सामाजिक-भावनात्मक क्षमता के पांच आयामों (यानी आत्म-जागरूकता, सामाजिक जागरूकता, आत्म-प्रबंधन, संबंध प्रबंधन और जिम्मेदार निर्णय कौशल) पर लिंग और स्थानीय अंतर का अध्ययन करना और किशोरों के बीच सामाजिक-भावनात्मक क्षमता और शैक्षणिक उपलब्धि के बीच संबंध का पता लगाना। वर्तमान अध्ययन के लिए, वर्णनात्मक सर्वेक्षण पद्धति का उपयोग किया गया था और जम्मू और कश्मीर केंद्र शासित प्रदेश के अनंतनाग जिले के 10 माध्यमिक विद्यालयों (05 सरकारी और 05 निजी स्कूलों) के 400 किशोरों के नमूने स्तरीकृत यादृच्छिक नमूने को नियोजित करके चुना गया था। अध्ययन के निष्कर्षों से पता चला है कि किशोरों में सामाजिक-भावनात्मक क्षमता के विभिन्न स्तर (अर्थात उच्च, औसत और निम्न) थे और बालिका किशोरों में बाल किशोरों की तुलना में बेहतर सामाजिक-भावनात्मक क्षमता थी। कुल मिलाकर, ग्रामीण और शहरी किशोरों में समान सामाजिक-भावनात्मक क्षमता थी और शहरी किशोर ग्रामीण किशोरों की तुलना में स्व-प्रबंधन कौशल में श्रेष्ठ थे। उच्च शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्त करने वाले निम्न शैक्षणिक उपलब्धि प्राप्तकर्ताओं की तुलना में अधिक सक्षम थे, चाहे उनका लिंग और स्थान कुछ भी हो। शैक्षणिक उपलब्धि और सामाजिक-भावनात्मक क्षमता एक-दूसरे से सकारात्मक रूप से सहसंबद्ध थी और उच्च सामाजिक-भावनात्मक क्षमता उच्च शैक्षणिक उपलब्धि की ओर ले जाती है। इस प्रकार, वर्तमान अध्ययन में शिक्षकों, माता-पिता, समाज सुधारकों, प्रशासकों और मार्गदर्शन कार्यकर्ताओं के लिए घर और स्कूल में अनुकूल वातावरण प्रदान करने और मूल्य शिक्षा को विकसित करने के लिए इसके निहितार्थ हैं ताकि सामाजिक-भावनात्मक क्षमता में सुधार किया जा सके। राष्ट्रीय शिक्षा नीति -2020 के संदर्भ में स्कूली पाठ्यक्रम को सभी शैक्षणिक गतिविधियों को शामिल करके संशोधित / संशोधित किया जाना चाहिए जो माध्यमिक विद्यालय स्तर पर छात्रों की सामाजिक-भावनात्मक क्षमता में सुधार करेगा।